© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
https://www.eurekajournals.com/shodh.html
ISSN: 2581-3501

# सीधी जिले में पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी एवं उनके बाधाओं का विष्लेषणात्मक अध्ययन

**अवधेष कुमार यादव[1], डॉ. आर. बी. एस. चौहान[2]**

[1]शोधार्थी अर्थशास्त्र विषय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

[2]प्राध्यापक अर्थशास्त्र, संजय गाँधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

## शोध सारांश

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए पशुधन सबसे महत्वूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र ग्रामीण आजीविका के संचालन एवं घरेलू स्तर पर महिलाओं के लिए रोजगार के रूप में जाना जाता है। ग्रामीण महिलाएँ पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के सीधी जिले में विभिन्न पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी एवं इसमें आने वाली प्रमुख बाधाओं का परीक्षण किया गया है। इस अध्ययन में 200 ग्रामीण महिलाओं से प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह संरचित प्रशनावली के माध्यम से एक बहु स्तरीय यादृच्छिक नमूना तकनीकी का उपयोग करके किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सरल वर्णानात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं के संबंध में अधिकांश ग्रामीण महिलाएँ मध्यम आयु वर्ग (44 प्रतिशत), विवाहित (77 प्रतिशत), अशिक्षित (80 प्रतिशत) है। पशुधन प्रबंधन गतिविधियों के लिए इन ग्रामीण महिलाएँ में 15 वर्षो का अनुभव है। शोध परिणमों से ज्ञात हुआ है कि पुरूषों की तुलना में ग्रामीण महिलाओं के पास 52 प्रतिशत से अधिक के पशुधन है। इन महिलाओं के पास ज्यादातर गाय, भैस, बछड़े, बकरी तथा भेड़ है। पशुधन प्रबंधन में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत 86 है, जो सामान्य से काफी अधिक है। महिलाएँ विभिन्न पशुधन प्रबंधन गतिविधियों के लिए अधिक समय देती हैं। अध्ययन में यह भी प्राप्त हुआ कि सीधी जिले में पशुधन प्रबंधन के लिए महिलाओं के सामने पशु चिकित्सा उपचार की उच्च लागत, पशुधन प्रशिक्षण में भागीदारी की खराब

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

स्थिति तथा ऋण की सुविधा का न प्राप्त होना जैसी प्रमुख बाधाएँ है। प्रस्तुत अध्ययन महिलाओं को पशुधन उत्पादन में अपनी भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए ऋण एवं पशुधन प्रशिक्षण सुविधाओं को बढ़ाने की आवश्यकता है। यह शोध आलेख भविष्य में ग्रामीण विकास के नीतियों के क्रियान्वयन में सहायक होगा।

**मुख्य शब्दः** पशुधन प्रबंधन, बाधाएँ, ग्रामीण महिला, विश्लेषण, सीधी जिला।

## प्रस्तावना

पशुधन क्षेत्र कृषि विकास की रीढ़ है। भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विकासशील देशों की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन क्षेत्र महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत में पशुपालन व्यापक रूप से लोकप्रिय है। ग्रामीण क्षेत्रों में भोजन और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए पशुधपालन एक आवश्यक गतिविधि है। देश के 20.5 अरब लोग अपनी आजीविका के लिए पशधुन पर निर्भर है। छोटे खेतिहर परिवारों की आय में पशुधन का योगदान 16 प्रतिशत है। जबकि कुल ग्रामीण परिवारों के लिए पशुधन का योगदान 14 प्रतिशत है। पशुधन क्षेत्र देश के दो-तिहाई ग्रामीण आबादी को आजीविका प्रदान करता है। यह क्षेत्र भारत में लगभग 8.8 प्रतिशत आबादी को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराता है। भारत में विशाल पशु संसाधन है। पशुधन क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 4.11 प्रतिशत तथा कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद में 25.69 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत में बड़े व छोटे जुगाली करने वाले मवेशियों की बहुतबड़ी संख्या है। यह क्षेत्र रोजगार के कई अवसर पैदा करता है। इसमें बड़ी संख्या में ग्रामीण परिवार के लोगां को डेयरी, दूध बने उप-उत्पाद तथा कृषि के लिए उर्वरक की विक्री से आजीविका प्राप्त होती है। सीधी जिला कृषि एवं पशुधन के मामले में मध्य प्रदेश का एक अग्रणी जिला माना जाता है।

पशुधन प्रबंधन एक लिंग-आधारित गतिविधि है। इसकी सभी गतिविधियों के लिए पर्याप्त मात्रा में समय, श्रम और कृषि पद्धतियों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इस कार्य में घर के पुरूष एवं महिला दोनों शामिल होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूष वर्ग मुख्य रूप से कृषि कार्यो जैसे प्रथाओं में संलग्न हैं। जबकि महिला वर्ग अपने घर की जिम्मेदारी के अतिरिक्त पशुधन गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागिता निभाती है। सीधी जिले में ग्रामीण महिलाएँ पशुधन क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य करते हुये पशुधन की स्थिरता में सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। क्योंकि अधिकांश पशुधन गतिविधियाँ महिलाओं की सहायता के बिना अधूरी रहती है। महिलाएँ पशुओं की देखभाल, चराई, मवेशियों के निवास स्थल/शेड आदि की सफाई, मवेशियों के बछड़ों आदि की देखभाल, आहार व हरी घास का संग्रह, पानी पिलाना, दुग्ध दुहना, खाद संग्रह एवं गोबर के उपले तैयार करने जैसी विभिन्न

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

पशुधन आधारित क्रियाओं को करती हैं। इसके अतिरिक्त महिलाएँ पशुधन का प्रबंधन करके खेतों के लिए जैविक खाद उपलब्ध कराकर कृषि के लागत को कम करने में मदद करती हैं। इन सबके साथ-साथ पशुधन महिलाओं को विभिन्न तरह के रोजगार के अवसर भी प्रदान करती हैं। महिलाएँ अपने घरों में घी, दही, मक्खन एवं पनीर जैसे प्रमुख डेयरी उत्पादों को तैयार करके विक्री से नगद धन अर्जन का कार्य भी करती हैं।

पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी को एक पारंम्परिक जिम्मेदारी माना जाता है। इसीलिए महिलाएँ पशुधन को एक संम्पत्ति के रूप में मानती है। इसीलिए ग्रामीण क्षेत्रों में इसे गरीबी कम करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है। पशुधन के क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाओं की क्षमता अधिक होती है। इसलिए महिलाएँ अपनी सामाजिक भलाई मे वृद्धि करके पशुधन आधारित आर्य अर्जन की गतिविधियों से आर्थिक सशक्तीकरण हेतु बहुत निकट से जुड़ी हुई हैं। निस्संदेह पूरे विश्व में, पशुधन गतिविधियों को बनाये रखने में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी अधिक है। महिलाएँ पुरूषों की तुलना में प्रतिदिन 6 घण्टे से अधिक का समय घरेलू व मवेशियों के देखरेख में लगाती है। लेकिन इनके कार्य को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता नहीं मिलती है। पशुधन संबंधी पूर्व के अध्ययनों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों जैसे हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश आदि राज्यों में महिलाओं की सक्रिया भागीदारी के साथ घरेलू स्तर पर पशुधन प्रबंधन की पुष्टि की है। पिछले कई अध्ययनों में महिलाओं द्वारा पशुपालन के साथ-साथ पशुधन प्रबंधन में कई प्रकार की बाधाओं जैसे संस्कृति व परंम्परा, गरीबी, धन की कमी, ऋण की उपलब्धता, पशुचारण की भूमि, पशु आश्रय स्थल एवं पशुधन प्रणाली के प्रति पर्याप्त ज्ञान की कमी का उल्लेख किया है।

पशुधन प्रबंधन में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी को देखते हुये वर्तमान अध्ययन के द्वारा विभिन्न पशुधन गतिविधियों में महिलाओं के योगदान का परीक्षण करना आवश्यक है। ग्रामीण महिलाओं द्वारा पशुधन प्रबंधन में उनकी भागीदारी में आने वाली बाधाओं को भी विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन मध्य प्रदेश के सीधी जिले में पशुधन विकास और महिला सशक्तीकरण के लिए उपयोगी होगा।

## शोध उद्देश्य

अध्ययन कार्य की उपादेयता के संदर्भ में निम्नलिखत उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं-

1. पशुधन प्रबंधन में सम्मिलित महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

2. सीधी जिले में पाये जाने वाले मवेशियों के नस्लों के प्रकारों की जानकारी का विश्लेषण।
3. महिलाओं के पास उनके आर्य अर्जन में मौजूदा पशुधन की स्थिति का विश्लेषण।
4. पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी करने में उपलब्ध समय की स्थिति का परीक्षण।
5. पशुधन प्रबंधन में महिलाओं के समक्ष आने वाली प्रमुख बाधाओं का विश्लेषण।

## सामग्री एवं विधितंत्र

पशुधन पालन में महिलाओं की अधिक भागीदारी के कारण अध्ययन कार्य हेतु सीधी जिले का चयन किया है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की संलग्नता पशुधन की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ी हुईहै। अध्ययन कार्य में 200 ग्रामीण महिलाओं को यादृच्छिक रूप से चुना गया है। चयनित महिलाएँ जिले के विभिन्न विकासखण्डों में घरेलू स्तर पर पशुधन गतिविधियों में सम्मिलित हैं। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन सर्वेक्षण तकनीकी के माध्यम से एक संरचित प्रश्नावली द्वारा किया गया है। पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने वाली महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं के परीक्षण के लिए बिन्दुबार प्रश्न पूछे गये हैं। ऐसे प्रश्नों के बारे में सहमति होने के लिए सकरात्मक वहीं असहमति होने में नकारात्मक आधार पर महिलाओं की प्रतिक्रियाएँ दर्ज की गयी हैं। शोध कार्य की प्रासांगिकता के अनुसार इस अध्ययन में द्वितीयक सूचना स्रोतों का संकलन पशुधन से संबंधित प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रतिवेदनों, शोध आलेखों, एवं समाचार पत्रों से किया गया है। साथ ही अध्ययन कार्य में इंन्टरनेट का भी उपयोग तथ्यों के संग्रह हेतु किया गया है।

## आंकड़ों का विश्लेषण

शोध कार्य में प्राप्त वर्णानात्मक आंकड़ों को एस.पी.एस.एस. साफ्टवेयर की सहायता से श्रेणी बद्ध कर उनका विश्लेषण किया गया है। जिसमें चरों की आवृत्ति का प्रतिशत निकाल कर परिणामों को दर्ज किया गया है। साथ ही अध्ययन में पुरूषों एवं महिलाओं द्वारा भागीदारी सीमा का औसत तुलना का अनुमान एक स्वतंत्र टी-परीक्षण द्वारा किया गया है।

## परिणाम एवं परिचर्चा

प्रस्तुत आलेख में अध्ययन क्षेत्र के महिलाओं द्वारा पशुधन प्रबंधन गतिविधियाँ, महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ, क्षेत्र में पशुधन के मुख्य प्रकार, पालतू मवेशियों की संख्या, पशुधन प्रबंधन में पुरूषों एवं महिलाओं के बीच भागीदारी की तुलना तथा पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाएँ इत्यादि से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है। अध्ययन में प्रयुक्त तथ्यों की परिचर्चा निम्नानुसार है-

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

## 1. महिलाओं द्वारा पशुधन प्रबंधन गतिविधियाँ

अध्ययन क्षेत्र सीधी जिले में ग्रामीण महिलाओं द्वारा पशुधन प्रबंधन गतिविधियों के लिए 8 अलग-अलग प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं। ये क्रियाएँ महिलाओं द्वारा पशुधन प्रबंधन के दैनिक कार्यो, घटनाओं एवं उपयोगिताओं के आधार पर चुना गया है। इन क्रियाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

1. **घास काटनाः** चारा फसलों, पौधों या घास को हाथ से पकड़ कर काटने वाले औजारों का उपयोग (जैसे हसिया, बाका व गड़ासा आदि)।
2. **आहार खिलानाः** मवेशियों के आहर के लिए कटा हुआ हरा चारा, अथवा सूखा आहार अथवा दोनों का मिश्रण देने का कार्य।
3. **पानी पिलानाः** मवेशियों को या तो उनके रहने की जगह पर पाने के पानी को उपलब्ध कराना अथवा उन्हें पास के जल स्रोत तालाब, नहर, नदी आदि स्थानों में ले जाना।
4. **साफ-सफाईः** मवेशियों के रखने के स्थान की साफ-सफाई करना। गोबर अथवा मलमूत्र को एक स्थान पर रखना और एकत्रित किये गये मलमूत्र को खेत में खाद के रूप में उपयोग करने हेतु ले जाना। साथ ही जैविक खाद तथा ईंधन के रूप में गोबर का उपयोग, गोबर गैंस में गोबर को घोलना अथवा गोबर से उपले बनाना।
5. **नवजात की देखभालः** नवजात तथा युवा मवेशियों के आहार देना तथा देखभाल करना एवं बीमार होने पर उपचार करना।
6. **दुध दुहनाः** विभिन्न प्रकार के दूध देने वाले मवेशियों जैसे गाय, भैस, बकरी तथा भेड़ इत्यादि से दूध निकाला अथवा दूध दुहना।
7. **दुग्ध उत्पाद तैयार करनाः** दुग्ध द्वारा विभिन्न प्रकार के उप-उत्पाद जैसे दही, मक्खन, घी, पनीर इत्यादि को बनाना।
8. **दुग्ध उत्पादों का विपणनः** आय अर्जन करने के लिए दूध एवं दूध से बने उप-उत्पादों का विक्रय करना।

## 2. ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ

भारत में ग्रामीण महिलाएँ पशुधन एवं कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए पशुधन प्रबंधन में इनकी भागीदारी का इनके सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि पर व्यापक प्रभाव असर है। सीधी जिले की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उल्लेख तालिका क्रमांक 1 में किया गया है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

**तालिका 1.महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ**

| क्र. सं. | समाजिक-आर्थिक करका | श्रेणी | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | उम्र | 20 से 30 वर्ष | 44 | 22 |
| | | 31 से 40 वर्ष | 88 | 44 |
| | | 40 वर्ष से अधिक | 68 | 34 |
| 2. | वैवाहिक स्थिति | विवाहित | 194 | 97 |
| | | अविवाहित | 4 | 2 |
| | | तलाकशुदा | 2 | 1 |
| 3. | शैक्षिक स्थिति | अशिक्षित | 160 | 80 |
| | | प्राथिमक शिक्षा | 40 | 20 |
| | | माध्यमिक शिक्षा | 11 | 5.5 |
| | | हायर सेकण्ड्री | 12 | 6 |
| | | स्नातक | 4 | 2 |
| 4. | पशुपालन का अनुभव (वर्ष में) | 1 से 5 वर्ष | 26 | 14 |
| | | 6 से 10 वर्ष | 64 | 24 |
| | | 11 से 15 वर्ष | 48 | 32 |
| | | 15 वर्ष से अधिक | | |

सर्वेक्षित आंकड़े (सत्रः 2021)

तालिका द्वारा प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि 44 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं की आयु 31 से 40 वर्ष के बीच है। पशुधन पालन गतिविधियों से संबंधित अधिकांश महिलाएँ मध्यम आयु वर्ग की है। वहीं 34 प्रतिशत महिलाएँ 40 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग की हैं। जबकि 22 प्रतिशत महिलाएँ 20 से 30 वर्ष की उम्र के बीच की हैं। कृषि और पशुधन गतिविधियों में युवा महिलाओं की हिस्सेदारी अपेक्षकृत कम है। इस अध्ययन में पशुधन पालन का कार्य करने वाले महिलाओं की वैवाहिक स्थिति पर प्राप्त आंकड़ें यह दर्शाते हैं कि 97 प्रतिशत महिलाएँ विवाहित हैं। वहीं 2 प्रतिशत महिलाओं की संख्या अविवाहित की श्रेणी में है। जबकि 1 प्रतिशत महिलाएँ तलाकशुदा हैं। उक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि अधिकांश महिलाएँ विवाहित हैं जो पशुधन प्रबंधन गतिविधियों से जुड़ी हैं। इसी तरह चयनित 200 महिलाओं में से उनकी शैक्षिक स्थिति का आंकलन किया गया जिसमें 80 प्रतिशत महिलाएँ अशिक्षित है। जबकि 20 प्रतिशत महिलाएँ विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर साक्षर हैं। शिक्षा प्राप्त करने के लिए ग्रामीण पुरूषों को अधिक महत्व दिया जाता है। जबकि ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

अवसरों के लिए कई प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। इस अध्ययन द्वारा महिलाओं में पशुधन पालन के अनुभव को भी दर्ज किया गया है। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि अधिकांश महिलाओं के पास लगभग 11 से 15 वर्षो का कृषि और पशुपालन का अनुभव है। इस तरह यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं में 15 वर्ष से अधिक के समय तक का पशुधन प्रबंधन का अनुभव है। इस तरह अध्ययन क्षेत्र की 32 प्रतिशत महिलाएँ यथोचित रूप से 11 से 15 वर्षो के पशुधन प्रबंधन का कुशल अनुभव रखती हैं।

## 3. अध्ययन क्षेत्र में पशुधन के मुख्य प्रकार

प्रस्तुत अध्ययन परिणामों से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र की अधिकांश महिलाएँ गाय, बैल, भैस, बछड़ा, बकरी एवं भेड़ इत्यादि का पालन करती हैं। तालिका क्रमांक 2 में महिलाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के पशुधन पालन की संख्या प्रदर्शित है। सीधी जिले के चयनित क्षेत्र में सामूहिक रूप से कुल 727 पशुधन को घरेलू स्तर पर पाला गया है। अधिकांश महिलाओं के पास बड़ी संख्या में गाय (36 प्रतिशत), बकरी (27 प्रतिशत) तथा भैस (16 प्रतिशत) हैं। जबकि बछड़ों एवं बैलों की संख्या क्रमशः 10 एवं 6 प्रतिशत हैं। इसी तरह भेड़ 5 प्रतिशत तथा सांड़ 1 प्रतिशत हैं। बकरी और गाय इस क्षेत्र में मुख्य पशुधन हैं, जिनमें गाय की औसत संख्या 1.31 एवं बकरी की औसत संख्या 1.64 प्रति परिवार है। इसके बाद बछडे व भैस दोनों की औसत संख्या 0.57 है। इन पशुओं को इनके आसान प्रबंधन तथ कम आहार के कारण यहाँ अधिकतर पाला जाता है। इस तरह इस क्षेत्र में प्रति परिवार औसतन लगभग 4 से 5 पशुओं को पाला जाता है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि 51 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाओं के पास विभिन्न प्रकार के पशुओं की देशी नस्लें हैं। जबकि 49 प्रतिशत विदेशी नस्ले पाली गई है। विदेशी नस्लों के मवेशियों की औसत उत्पादकता सीधी जिले में किसानों के स्वामित्व वाली देशी नस्लों की तुलना में अधिक है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

**तालिका 2.क्षेत्र में पशुधन के विभिन्न प्रकार**

| क्र. सं. | पशुधन के प्रकार | आवृत्ति | प्रतिशत | प्रति परिवार औसत पशुपालन |
|---|---|---|---|---|
| 1. | गाय | 160 | 36 | 1.31 |
| 2. | बैल | 40 | 6 | 0.20 |
| 3. | भैस | 114 | 16 | 0.57 |
| 4. | साड़ | 8 | 1 | 0.04 |
| 5. | बछड़ा | 74 | 10 | 0.57 |
| 6. | बकरी | 195 | 27 | 1.64 |
| 7. | भेड़ | 36 | 5 | 0.18 |
| | कुल | 727 | 100 | 4.52 |
| | विदेशी नस्ल | 98 | 49 | |
| | स्वदेशी नस्ल | 102 | 51 | |

सर्वेक्षित आंकड़े (सत्रः 2021)

## 4. क्षेत्र में पुरूष एवं महिलाओं द्वारा पाले जाने पालतू मवेशियों की संख्या

अध्ययन क्षेत्र में चयनित ग्रामीण महिलाओं द्वारा पाले जाने वाले मवेशियों की संख्या तालिका क्रमांक 3 में दर्ज किया गया है।

**तालिका 3.क्षेत्र में पाले जाने पालतू मवेशियों की संख्या की तुलना**

| क्र. सं. | पशुधन | पशुधन का स्वामित्व | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | पुरूष | | महिला | |
| | | आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 1. | गाय | 92 | 34 | 176 | 66 |
| 2. | बैल | 30 | 73 | 11 | 27 |
| 3. | भैस | 67 | 61 | 43 | 39 |
| 4. | साड़ | 15 | 56 | 12 | 44 |
| 5. | बछड़ा | 72 | 41 | 102 | 59 |
| 6. | बकरी | 127 | 31 | 289 | 69 |
| 7. | भेड़ | 12 | 35 | 22 | 65 |

सर्वेक्षित आंकड़े (सत्रः 2021)

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

तालिका द्वारा प्राप्त आंकड़ों के परिणामों से संकेत मिलता है कि 66 प्रतिशत महिलाओं के यहाँ 176 गायें, 59 प्रतिशत महिलाओं के पास 102 बछड़े, 69 प्रतिशत महिलाओं के पास 289 बकरियाँ तथा 65 प्रतिशत महिलाओं के पास 22 भेड़े है। जबकि महिलाओं की तुलना में पुरूषों के पास बैल, भैस एवं सांड़ जैसे मवेशियों की संख्या अधिक है। इस तरह स्पष्ट होता है कि महिलाओं द्वारा मवेशियों की संख्या उनके सकारात्मक पहलू को प्रदर्शित करते हैं। तथ्यों से ज्ञात होता है कि ग्रामीण महिलाओं में पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में सक्रियता है। पशुओं को पालने के मामले में ग्रामीण महिलाएँ सक्षम है। साथ ही यह सक्रियता घर के भीतर उनकी निर्णय लेने की क्षमता व शक्ति को बढ़ाता है। अध्ययन परिणाम से यह भी स्पष्ट होता है कि महिलाओं के स्वामित्व वाले कुल मवेशियों की संख्या 655 है जबकि पुरूषों के पास 415 मवेशी है। पशुधन के स्वामित्व के मामले में तुलना करने पर ज्ञात होता है कि महिलाओं के पास 52.7 प्रतिशत पशुधन हैं। वहीं पुरूषों के पास 47.3 प्रतिशत पशुधन है।

## 5. पशुधन प्रबंधन में पुरूषों एवं महिलाओं के बीच भागीदारी की तुलना

अध्ययन क्षेत्र सीधी जिला मं पशुधन प्रबंधन की गतिविधियों में भागीदारी करने वाली ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को तालिका क्रमांक 4 में सारणीबद्ध किया गया है।

**तालिका 4.पशुधन प्रबंधन में पुरूषों एवं महिलाओं के बीच भागीदारी की तुलना**

| क्र. सं. | पशुधन गतिविधि | भागीदारी की सीमा | | | | औसत समय का आवंटन (घण्टे प्रतिदिन) | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | आवृत्ति | | प्रतिशत | | पुरूष | महिला** |
| | | पुरूष | महिला** | पुरूष | महिला** | | |
| 1. | घास काटना | 70 | 146 | 35 | 73 | 1.55 | 2.28 |
| 2. | आहार खिलाना | 36 | 175 | 18 | 88 | 1.06 | 1.50 |
| 3. | पानी पिलाना | 27 | 178 | 14 | 89 | 0.72 | 2.25 |
| 4. | पशु आवास की साफ-सफाई | 14 | 190 | 7 | 95 | 1.01 | 1.31 |
| 5. | नवजात पशु की देखभाल | 45 | 154 | 7 | 77 | 0.86 | 0.94 |
| 6. | दुध दुहना | 26 | 173 | 10 | 87 | 0.61 | 0.68 |
| 7. | दुग्ध उत्पाद तैयार करना | 6 | 177 | 3 | 58 | 0.53 | 0.89 |
| 8. | दुग्ध उत्पादों का विपणन | 13 | 63 | 7 | 32 | 0.91 | 0.73 |

नोटः **टी-टेस्ट को असमान विचरण मानते हु ए $P \leq 0.001$ पर तुलना के आधार पर गणना की गई है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

अध्ययनगत आंकड़ों से ज्ञात होता है कि पुरूष और महिला दोनों अलग-अलग समय में पशुधन गतिविधियों में भागीदारी करते हैं। लेकिन कुछ गतिविधियों में महिलाएँ विशेषरूप से दुग्ध उत्पाद बनाने और उनके विपणन में सक्रिया रूप से लगी होती हैं। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सीधी जिले के चयिनत क्षेत्र में विभिन्न पशुधन गतिविधियों की भागीदारी 86 प्रतिशत से अधिक है। इसी तरह सीधी जिले के कुसमी व मझौली विकासखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ पुरूषों की तुलना में पशुधन गतिविधियों में 50 प्रतिशत से अधिक की भागीदारी अकेले करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सीधी जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में अधिक रहती है। यह स्थिति उनके कार्यशैली को व्यक्त करती है। पुरूषों की तुलना में महिलाएँ पशुधन गतिविधियों के प्रबंधन में अधिक समय देती है। तालिका द्वारा प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि महिलाओं द्वारा विभिन्न पशुधन पालन की गतिविधियों के लिए जो औसत समय दिया है, उसमें घास काटने के लिए 2.28 घण्टे प्रतिदिन, पानी पिलाने के लिए 2.25 घण्टे प्रतिदिन, आहार देने में 1.5 घण्टे प्रतिदिन रहा है। विभिन्न तरह की पशुधन प्रबंधन गतितिविधों के लिए कुल समय में से पुरूषों की तुलना में महिलाओं द्वारा अपना अधिकतम समय 10.58 घण्टे प्रतिदिन देती हैं।

## 6. पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाएँ

अध्ययन क्षेत्र सीधी जिले के पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में भागीदारी करने वाले ग्रामीण महिलाओं ने सात प्रकार की प्रमुख बाधाओं का सामना करने हेतु बताया है। पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन के मामले में ये बाधाएँ पुरूषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी दर पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इनमें से कुछ बाधाएँ जहाँ उनके सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी से संबंधित हैं तो वहीं कुछ बाधाएँ महिलाओं की कार्यशैली व समय प्रबंधन से जुड़ी हुईहैं। इन रूकावटों अथवा बाधाओं के बारे में सहमति व असहमति का अनुमान उनकी सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रतिक्रिया के अनुसार दर्ज कर श्रेणी बद्ध किया गया है। तालिका क्रमांक 5 में सीधी जिले के पशुधन प्रबंधन में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख बाधाओं को प्राप्त आंकड़ों के आधार पर दर्ज किया गया है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

**तालिका क्रमांक 5.पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाएँ**

| क्र. सं. | प्रमुख बाधाएँ | आवृत्ति | प्रतिशत | श्रेणी का क्रम |
|---|---|---|---|---|
| 1. | वित्तीय सहायता की आवश्यकता | 159 | 80 | III |
| 2. | मंहगे पशु आहार | 148 | 74 | IV |
| 3. | मंहगी पशु उपचार सेवा | 174 | 87 | I |
| 4. | पशु प्रशिक्षण की आवश्यकता | 170 | 85 | II |
| 5. | पशुपालन में इच्छा की कमी | 60 | 30 | VII |
| 6. | अन्य घरेलू कार्य का भार | 130 | 65 | V |
| 7. | पशुधन विपणन में निर्णय निर्मण | 100 | 50 | VI |

सर्वेक्षित आंकड़े (सत्रः 2021)

तालिका द्वारा प्राप्त आंकड़ों के परिणामों से ज्ञात होता है कि पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं के लिए सबसे प्रमुख बाधा पशु चिकित्सा सेवाओं का मंहगा होना है। इसके लिए 87 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी सहमति व्यक्त की है। इसी तरह महिलाओं ने पशुधन प्रबंधन से जुड़ी दूसरी समस्या के लिए पशुधन पालन प्रशिक्षण न मिलना बताया है। जबकि तीसरी बाधा के अन्तर्गत वित्तीय आवश्यकता के बारे में अपनी सहमत व्यक्त की है। पशु चिकित्सा सेवाओं के मंहगे होने और पशुपालन का तकनीकी प्रशिक्षण न मिलने से पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं के सामने बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। क्योंकि अधिकांश ग्रामीण महिलाएँ गरीब है और उनके पास अक्सर ऋण लेने तक की पहुँच नहीं होती है। वहीं महिलाओं द्वारा चौथी बाधा पशु आहार सामग्री के मंहगे होने को मानती हैं। इन सबके साथ-साथ महिलाएँ अन्य घरेलू गतिविधियाँ जैसे बच्चों की देखभाल, खाना बनाना, घर की साफ-सफाई, वर्तन धोने आदि कई कार्यो में संलग्न रहती हैं। जिसके कारण पशुधन प्रबंधन गतिविधियों को सम्भालने में उन्हें बाधाएँ आती है। उक्त बाधाओं के साथ-साथ ग्रामीण महिलाओं में पशु विपणन करने में सही निर्णय न लेने से उनको अपने आर्थिक व्यवस्था के परिपालन में प्रतिकूल प्रभाव उठाना पड़ता है।

## निष्कर्ष एवं सुझाव

पशुधन प्राथमिक आजीविका गतिविधि है। जिसका उपयोग घरेलू जरूरतों की पूर्ति के साथ-साथ इससे भोजन में पशु प्रोटीन की मात्रा को पूरा किया जाता है। सामान्यतः पशुधन कृषि के पूरक आय प्राप्ति का एक प्रमुख स्रोत है। अध्ययन क्षेत्र सीधी जिले के चयनित क्षेत्रों में पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में महिलाओं की प्रमख भागीदारी है। ग्रामीण महिलाओं के द्वारा गाय, बछड़ा, बकरी तथा भेड़ इत्यादि

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

प्रमुख मवेशियों के पालने में इनकी प्रमुख भूमिका है। पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों की तुलना में काफी अधिक पायी गई है। महिलाएँ विभिन्न पशुधन गतिविधियों के लिए प्रतिदिन अधिक से अधिक समय व्यतीत करती हैं। पशु उपचार के लिए उच्च लागत वाली पशु चिकित्सा सेवाएँ, पशुपालन हेतु उचित प्रशिक्षण तथा ऋण सुविधाओं तक न पहुँच पाने की खराब स्थिति जैसी कई प्रमुख बाधाएँ पशुधन प्रबंधन गतिविधि से जुड़ी महिलाओं के सामने हैं। अध्ययन परिणामों द्वारा प्राप्त आंकड़ों व तथ्यों के आधार पर महिलाओं के लिए पशुधन प्रबंधन गतिविधियों को उत्कृष्ट बनाने के लिए असमानताओं को दूर किया जाना चाहिए। साथ ही इन्हें पशुपालन हेतु तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। जिससे पशुधन क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं की भागीदारी को मजबूत बना कर उन्हें इस कार्य हेतु प्रोत्साहित किया जा सके। पशुधन पालन की गतिविधियों से जुड़ी महिलाओं को शासन स्तर पर ऋण स्वीकृति करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। जिससे वे पशुधन पालन की गतिविधियों को आसान बना सके। सीधी जिले में पशुधन प्रबंधन की गतिविधियों से जुड़ी महिलाओं में उनके आजीविका के उत्थान हेतु शासन द्वारा सब्सिडी व राहत पैकेज दिया जाना चाहिए। पशुधन पालन करने वाले ग्रामीण  महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में शासन की महिला केन्द्रित योजनाएँ आर्थिक उत्थान हेतु सहायक होगी।

## अभिस्वीकृति

प्रस्तुत शोध आलेख को पूर्ण करने में सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के पशुधन पालन में संलग्न ग्रामीण महिलाओं के प्रति आभारी हूँ। जिन्होंने शोध अध्ययन से संबंधित संम्पूर्ण जानकारी देने में किसी भी तरह की कोई समस्या नहीं आने दी। साथ ही इस शोध कार्य में आवश्यक जानकारी उपलब्ध करने हेतु मैं पशुधन विभाग सीधी तथा विकासखण्ड के जनपद कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। यह अध्ययन जिले के महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु समर्पित है।

## संदर्भ

अरशद, एस., मुहम्मद, एस. एवं अशरफ, आई. पशुपालन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी, जर्नल ऑफ एनिमल प्लांट साइंस, 2019, 23: 304-308.

बिरदार, एन., देसाई, एम., मंजूनाथ, एल. एवं डोड्डमनी, एम. टी. पश्चिमी महाराष्ट्र के किसानों की आजीविका के लिए पशुधन के योगदान का आकलन, जर्नल ऑफ ह्यूमन इकोलॉजी, 2013, 41 (2): 107-112.

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

बुनियादी पशुपालन सांख्यकी (2006), भारत सरकार, कृषि मंत्रालय, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन विभाग, नई दिल्ली।

बेग, आर., कुमार, के. एवं शर्मा, जी. पशुधन प्रबंधन प्रथाओं पर महिला पशुधन किसानों की जागरूकता पर एक अध्ययन, इम्पैक्ट जर्नल्स, 2016, 4: 21-24.

बोस, पी. के. एवं देव एस. पी. मध्य भारत में जलवायु परिवर्तन के खिलाफ बड़े जुगाली करने वाले (गांय एवं भैंस) वाले छोटे पशुधन किसानों के लिए अनुकूलन विकल्प, पर्यावरण विज्ञान प्रदूषण एवं शोध, 2020, 27: 17835-17848.

बनुरी, एस.ए.एच. नंगरहार प्रांत में पशुधन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी, इंटरनेशन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लनरी रिसर्च एण्ड डेवल्पमेन्ट, 2019, 6: 125-128.

चांद, आर. एवं राजू, एस. एस. पशुधन क्षेत्र की संरचना और इसके विकास को प्रभावित करने वाले कारक, इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 2008, 63 (2): 198-210.

चौहान, एन. गुजरात में कृषि और पशुपालन में आदिवासी कृषि महिलाओं की भूमिका, कर्नाटक जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, 2012, 24 (5): 2010-2012.

गैली, ए., ट्यूफेल, एन., कोरिर, एल., बाल्टनवेक, आई. एवं वेब गिरार्ड ए. पशुधन सूचकांक में महिला सशक्तिकरण, सोशल इंडिकेशन रिसर्च, 2019 142: 799-825.

इकबाल, एम. ए. उत्तर भारत में ग्रामीण परिवर्तन पर पशुधन पालन की भूमिकाः एक विशेष अध्ययन, जर्नल ऑफ ज्योग्राफी 2010, 5 (2), 83-94.

जैन, पी. एवं सिघल, ए. भीलवाड़ा जिले में पशुधन प्रबंधन गतिविधियों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी, राजस्थान जर्नल ऑफ एक्सटेशन एजुकेशन, 2012, 20: 190-193.

कविता, एल. एवं रेड्डी, एम. एस. कृषक महिलाओं की व्यक्तिगत और सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ, जर्नल ऑफ रिसर्च, अंगराउ 2007, 35 (1): 79-83.

कथिरिया, जे. बी., दमासिया, डी. एवं कबरिया, बी. बी. राजकोट जिले की डेयरी फार्मिंग में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका, तमिलनाडु जर्नल ऑफ विटनरी एण्ड एनिमल सांइस, 2013, 9: 239-247.

कुशवाहा, ए., सिंह, पी. एवं कुमार, एस. पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी एवं बाधाएँ, सामाजिक विज्ञान विकास एवं कृषि तकनीकी, 2014, 9: 654-657.

कुशवाहा, ए., बाजपेयी, ए. एवं कुंवर, एन. कानपुर जिले में पशु उत्पादों की बिक्री में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी, 2020, 5 (3), 34-36.

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

खान, एन., रहमान, ए. एवं सलमान, एम. एस. उत्तर भारत में सामाजिक-आर्थिक विकास पर पशुधन पालन का प्रभाव, फोरम जियोग्राफिक, 2013, 12 (1): 75-80.

मथी, एस., न्यांगिव, एन., मेन्हास, आर., मुशुनजे, ए., इघोडारो, आई.डी. पूर्वी केप प्रांत, दक्षिण अफ्रीका में लघु-स्तरीय कृषि प्रणाली के तहत पशुधन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी, जर्नल ऑफ एप्लाईड एनिमेल हास्बेन्ड्री एवं रूरल डेवलपमेन्ट, 2018, 11: 14-21.

मिश्रा, एस., शर्मा, एस., वासुदेवन, पी., भट्ट, आर. के., पाण्डे, एस., सिंह, एम., मीणा, बी. एस. एवं पाण्डे, एस. एन. मध्य भारत के बुंदेलखंड क्षेत्र में पशुधन प्रबंधन प्रथाओं में लिंग भागीदारी एवं महिलाओं की भूमिका, इण्टरनेशन जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 2008, 15 (1): 1-5.

नाज़, एस., खान, एन. पी., अफसर, एन. एवं शाह, ए. ए. पशुधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी एवं बाधाएँ: बिहार राज्य के संदर्भ में, आई.जे.सी.आर.टी. 2019, 8 (7): 423-428.

पशुधन जनगणना रिपोर्ट, 2019, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।

सुरेश, ए., गुप्ता, डी. सी., मान, जे. एस. एवं सिंह, वी. के. राजस्थान में पशुधन की संरचना और स्वामित्व पर सामाजिक-अर्थव्यवस्था एवं कृषि-पारिस्थितिक कारकों का प्रभाव, इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 2008, 63 (2): 244-264.

वार्षिक रिपोर्ट 2014-15, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन विभाग, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।